गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

विश्वविद्यालय के 67वें स्थापना दिवस के अवसर पर माननीय राज्यपाल, उत्तराखण्ड ने कृषि प्रदर्शनी का किया अवलोकन

पंतनगर। 18 नवम्बर 2026। पंतनगर। गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर के 67वें स्थापना दिवस (17 नवंबर 2026) के अवसर पर पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय के प्रांगण राज्य के विभिन्न जिलों के कृषको, स्वयं सहायता समूहों और कृषक उत्पादक संगठनों द्वारा प्रदर्शनी लगाई गयी। इस प्रदर्शनी में श्रीअन्न के मूल्यवर्धित उत्पाद, प्रसंस्कृत मसाले, मोमबत्ती, मूँज घास के उत्पाद, जैविक दालें, हर्बल चाय, ऐपण कला, जैविक खाद, गाय के गोबर से निर्मित विभिन्न उत्पाद, प्राकृतिक शहद इत्यादि का प्रदर्शन किया गया। माननीय राज्यपाल, उत्तराखण्ड ने स्टॉल संचालकों से संवाद कर उनके उत्पादों की गुणवत्ता, विपणन और आय वृद्धि के प्रयासों की जानकारी ली एवं नवाचारों की सराहना की।

प्रदर्शनी के अवलोकन के पश्चात माननीय राज्यपाल द्वारा कृषक संवाद कार्यक्रम मैं कृषको से सीधा संवाद किया गया। संवाद कार्यक्रम के प्रारम्भ में निदेशक प्रसार शिक्षा डा. चन्देश्वर तिवारी ने स्वागत उद्‌बोधन एवं कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशालय की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि प्रसार शिक्षा निदेशालय, विश्वविद्यालय की प्रयोगशालाओं में विकसित उन्नत तकनीकों और किसानों की वास्तविक आवश्यकताओं के बीच एक सशक्त कड़ी के रूप में कार्य कर रहा है। उत्तराखंड के विभिन्न जनपदों में स्थित कृषि विज्ञान केंद्र, प्रक्षेत्र प्रदर्शन, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, कृषकों के कौशल एवं क्षमता संवर्धन, ग्रामीण युवाओं का दक्षता विकास, स्वरोजगार एवं उद्यमिता विकास, प्राकृतिक, जलवायु–अनुकूल खेती और आधुनिक कृषि यंत्रों के प्रयोग से खेती को अधिक लाभदायक व्यवसाय बनाने हेतु निरंतर अग्रसर हैं तथा प्रसार शिक्षा निदेशालय युवा उद्यमियों को अपने नवाचार, कौशल एवं उद्यमिता को प्रदर्शित करने तथा अपने व्यवसाय को नई ऊँचाईयों तक पहुंचाने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करता है।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति डा. शिवेंद्र कुमार कश्यप ने माननीय राज्यपाल के स्वयं के खेती–किसानी से जुड़े अनुभवों को साझा किया। उन्होंने बताया कि माननीय राज्यपाल का कृषि और ग्रामीण परिवेश से गहरा जुड़ाव रहा है तथा उन्हें खेती की व्यावहारिक बारीकियों का व्यापक अनुभव है। उन्होंने कहा कि माननीय राज्यपाल का यह जमीनी अनुभव न केवल किसानों के लिए प्रेरणादायक है, बल्कि विश्वविद्यालय के कृषि शोध और नीतियों को सही दिशा देने में भी मार्गदर्शक है।

कृषक संवाद कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल ने मोती पालन, बेमौसमी सब्जियाँ, शहद उत्पादन, मोमबत्ती निर्माण, मशरूम उत्पादन, नर्सरी प्रबंधन, प्राकृतिक खेती, ब्लू कॉर्नफ्लावर (नीले फूल) की खेती, समन्वित खेती तथा धान के स्थान पर बसंतकालीन मक्का उगाने वाले नवाचारी किसानों ने अपने अनुभव साझा किए। प्रगतिशील किसानों से संवाद करते हुए माननीय राज्यपाल ने उनके नवाचारों की प्रशंसा की। इस अवसर पर अपने संबोधन में माननीय राज्यपाल ने कहा उच्च मूल्य वाली खेती और मूल्य संवर्धन पर जोर देते हुए उन्होंने आगे कहा कि जब एक प्रगतिशील और बड़ा किसान नवाचार, मूल्य संवर्धन, प्रसंस्करण और आधुनिक कृषि उद्यमों को अपनाता है, तो वह केवल अपनी आय ही नहीं बढ़ाता, बल्कि अन्य ग्रामीण युवाओं, महिलाओं और छोटे किसानों को भी रोजगार प्रदान करने वाला बन जाता है।

कार्यक्रम में निदेशक प्रशासन एवं अनुश्रवण, अधिष्ठाता, पशुचिकित्सा महाविद्यालय, डा. देवेन्द्र कुमार, कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक तथा विभिन्न जिलों से आये हुए प्रगतिशील कृषक उपस्थित थे। संचालन डा. निर्मला भट्ट ने किया, तथा कार्यक्रम के समापन पर डा. संजय चौधरी ने मुख्य अतिथि एवं सभी वैज्ञानिकों और प्रगतिशील किसानों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।



कार्यक्रम में कृषकों से संवाद करते महामहिम राज्यपाल डा. ढाल सिंह बिसेन।

निदेशक संचार